करते हुए आनंद देते हैं। अपनी अमृतमयी नजरों से प्रेम रूपी अमीरस का पान करवाते हैं तथा कई प्रकार से हांस विनोद करते हैं।

चाँद चौदमी रात का , बैठे चाँदनी नूरजमाल ।
सनमुख सबे बैठाए के , करें खावंद रूहें खुसाल ।। परि. 9/28
अमृत खसम रूहन पर , नूर नजरों सींचत ।
सो रस रूहें रब का , सनमुख रोसन पीवत ।। परि. 9/29

इस समय सखियाँ चारों तरफ के सुंदर दृश्यों को निहारते हुए कई प्रकार से आनंद लेती हैं। चारों तरफ अनेकों रंगों के प्रतिबिंब से युक्त, ताल की अद्‌भुत शोभा दिख रही है। चारों तरफ पाल पर 128 देहुरियों तथा बड़ोवन के वृक्षों के पाँचों भोमों की शोभा भी बहुत सुंदर दिख रही है।

जब खूबी ताल यों देखिये , चढ़ चाँदनी पर ।
फिरती पाल बन द्‌योहरी , जल सोभित अति सुंदर ।। परि. 9/8

तत्पश्चात् नृत्य की लीला का आनंद लेकर सुखपाल में सवार होकर रंगमहल की तरफ प्रस्थान करते हैं।

कुंज–निकुंज

रंगमहल परमधाम के ठीक मध्य में एक ताज की तरह, राजा के मुकुट की तरह जगमगा रहा है। सम्पूर्ण परमधाम नूर तत्व का है। इस तत्व की चार विशेषताएं हैं–

1– कोमलता 2– सुगंधि 3– स्वप्रकाशिता 4– चेतनता

नूर तत्व की पहली विशेषता है कोमलता। परमधाम की प्रत्येक लीलारूप सामग्री अत्यंत कोमल है। दूसरी विशेषता है सुगंधि। इसलिये हम परमधाम में जहां भी विचरण करते हैं, हमारी नासिका अनंत प्रकार की सुगंधियों का अनुभव करती है। तीसरी विशेषता है स्वप्रकाशिता। परमधाम की प्रत्येक वस्तु, चाहे वह जल हो या धरती हो, वनस्पति हो या पशु–पक्षी, प्रत्येक लीलारूप सामग्री में से अनेक रंगों की किरणें निकलते रहती हैं। चौथी विशेषता है चेतनता। परमधाम की प्रत्येक वस्तु चेतन (आत्म स्वरूप) है। सम्पूर्ण परमधाम इन चार विशेषताओं को धारण किए नूर तत्व से युक्त है।

यहाँ के वृक्ष, पशु–पक्षी, नदियाँ आदि सभी नूरमयी, चेतन व इश्क के स्वरूप हैं इसलिए इन वृक्षों का कभी एक पत्ता भी नहीं गिरता है, न ही पशु–पक्षियों का पंख या बाल गिरता है। ये सभी अखण्ड, अनादि हैं।

एक बाल न गिरे पसुअन का , न खिरे पंखी का पर ।
पात पुराना न होवहीं , अर्स जंगल या जानवर ।। परि. 32/31

रंगमहल की दक्षिण दिशा में बट पीपल की चौकी आयी है। कुंज–निकुंज वन, बटघाट से चलकर, बट–पीपल की चौकी के दक्षिण से होते हुए, हौजकौसर ताल

की परिक्रमा लगाकर अक्षरधाम के पूर्व तक गये हैं। इसकी कुल चौड़ाई साड़े सात लाख कोस तथा लम्बाई 19 लाख कोस की होती है। बट पीपल के चौकी के दक्षिण दिशा में कुंज–निकुंज वनों के मध्य से होते हुए बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें गयी हैं।

कुंज–निकुंज वनों की विशेषता यह है कि यहां की सभी वस्तुएं फूलों, पत्तों, बेलों व लताओं से शोभायमान हैं। यहां की दीवारें, गलियां, स्तम्भ सभी नूरमयी फूलों से सुसज्जित हैं। फूलों की ही शैय्या, फूलों के झूले, फूलों के ही वस्त्र और आभूषण भी फूलों के ही हैं। ये फूल इतने कोमल हैं कि इनमें एक नस (रग) भी नहीं है।

फूल पात जो कोमल , रगां तिनमें कोई नाहें ।
तिनके सेज चबूतरे , बने जो मोहलों माहें ।। परि. 7/16

नहरों, तालाब व चहबच्चों में भी नाना प्रकार के फूलों की प्रजातियां दिखाई देती हैं। कुंज–निकुंज वनों में फूलों की वजह से सुगंधि, कोमलता और अनंत रंगों की प्रधानता है। इन वनों में अलग–अलग रंगों के फूल झूम–झूमकर सुगंधि बिखेर रहे हैं।

कुंज–निकुंज वनों में श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ जब आते हैं, तो फूलों के शैय्या, सिंहासन व मंदिरों में अनेक प्रकार से आनंद लेते हैं। यहाँ के वातावरण में फूलों की अनंत प्रकार की खुशबू से युक्त, शीतल वायु बह रही है, जिसका आनंद लेते हुए श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ हाँस–विनोद करते हुए यहाँ घूमते हैं।

कै सुख इन हिण्डोलन के , कै सुख सेज फूलन ।
कै सुख लवाजमें मंदिरों , कै सुख फूल सिंहासन ।। बड़ी वृत्त 87/46

कुंज–निकुंज वनों की जमीन पर नूरमयी बारीक रेती बिछी है। जो हीरे–मोती आदि जवाहरातों के समान जगमगा रहे हैं, ये रेती द्विकोनी, त्रिकोनी, चौकोनी तथा गोल आदि सभी आकार के हैं।

कित जानो हीरा कनी , हर ठौर हर भांत घनी ।
कित दोखूनी तीन चौखूनी , कित फिरती कहूँ गोल बनी ।। परि. 3/35

यहाँ की रेती इतनी बारीक है कि पैर, रखते ही घुटने तक धस जाते हैं। इसलिए यहाँ पर सखियाँ दौड़ते हुए अनेक प्रकार से खेलती हैं, कूदती हैं, गुलाटी खाती हैं, रब्द करके दौड़ लगाती हैं, पैरों से रेत उड़ाती हैं। कभी दो–दो सखियाँ एक दूजे का हाथ पकड़कर दौड़ लगाती हैं, कभी एक दूजे पर झुण्ड के झुण्ड गिर पड़ती हैं फिर हंसते हुए ताली बजाती हैं। सखियों के ऐसे नूरी तन हैं कि जो कितना भी खेलने पर थकते ही नहीं हैं।

जित बोहोत रेती मोती पतले, गड़त घूटन लों पाए।
इत सबे मिल सखियां, रब्द गुलाटें खाएं।। परि. 7/41
इन बोहोत रेती में सखियाँ , दौड़ दौड़ देत गुलाटें ।
कूदें दौड़े ठेकत हैं , रेत उड़ावें पाऊँ छांटें ।। परि. 7/42

कहूं कहूं सखियां ठेकत, माहें रेती रब्द कर।
पीछे हँस हँस ताली देयके, पड़त एक दूजी पर।। परि. 7/45

इस रेती पर जब हम वाला जी के साथ पकड़न पकड़ाई की रामत खेलते हैं तो राजजी इस प्रकार दौड़ते हैं कि 12,000 सखियाँ मिलकर भी उन्हें पकड़ नहीं पाती हैं। इस प्रकार यहाँ इतना हाँस–विनोद होता है कि यहाँ से जाने की इच्छा ही नहीं होती है।

कुंजवन की रेती में पिया चलो दौड़िये जाये।
जो जाको छुई लेत है, सो ताके हाथ बिकाये।।

इस रामत में अगर कोई सखी वाला जी को पकड़ लेती है, तो वाला जी उस सखी के हाथ बिके माने जाते हैं। सखी कहती है कि हे वाला जी! जब तक रामत चलेगी, आप मेरे साथ रहोगे। अब आप मेरे प्रेम में बंध गये हैं।

अब आईये! कुंज और निकुंज वन के महलों की शोभा निहारते हैं। कुंज व निकुंज वन की शोभा एक समान है, फर्क सिर्फ इतना है कि कुंज वन चौरस हैं और निकुंज वन गोल हैं। आईये एक महल की शोभा देखते हैं। कुंज वन में रेती के ऊपर सर्वप्रथम एक कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। इस चबूतरे पर रौंस की जगह छोड़कर मंदिरों की एक हार आयी है, जिसमें चारों दिशा के मध्य में 1–1 बड़ा दरवाजा है, तथा इसके दायें–बायें 41–41 मंदिर हैं। इन मंदिरों में नाना प्रकार के फूलों के वस्त्राभूषण रखे हुए हैं, फूलों की ही शैय्या विद्यमान है। फूलों के आभूषण और वस्त्रों का श्रृंगार करके हम सखियां धणी के साथ अनेक प्रकार से रामतें करती हैं। मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर अंदर (मंदिरों के भीतरी तरफ) एक गली व स्तम्भों की एक हार आयी है। यहां सारी शोभा फूलों की है। चलते हुए पांव के नीचे फूलों की गिलम बिछी हुई है। द्वार से अंदर प्रवेश करने पर जो स्तम्भों की हार आयी है, वह भी फूलों से ही सुसज्जित है। ये स्तम्भ अनंत रंग व कोमलता से युक्त हैं।

गली और स्तम्भों को पार करके तीन सीढ़ी उतर कर जब आगे आते हैं तो नाना प्रकार के फूलों व फलों से युक्त बगीचे दिखायी पड़ते हैं। प्रत्येक बगीचों की चारों दिशाओं में नहरें एवं चारों कोनों में चहबच्चे शोभायमान हैं। वृक्षों की मेहराबों में फूलों के ही सुंदर हिण्डोले लटक रहे हैं, जो झूलते हुए अत्यंत आनंद प्रदान करते हैं। श्रीराजश्यामा जी एवं सखियां यहां शीतल सुगंधित वायु के मध्य झूलने का आनंद लेते हैं।

इत कई हिण्डोले दरखत में, छूटे अति सुखदाए।
हक हादी रूहें हींचत, इत शीतल बाव शोभाए।। बड़ी वृत 88/28

इन बगीचों के आगे, मध्य में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। जिसके मध्य में स्थित पानी का कुण्ड (चहबच्चा) पूरे महल की शोभा को अलग ही रूप प्रदान कर रहा है। चहबच्चे के चारों कोनों में चार फव्वारे आये हैं, जिनकी बूंदें मोती के समान उछलती दिख रही हैं।

गृद चारों तरफों मंदिर, इत चौक पड़ा दरम्यान ।
तहां चबूतरा शोभित, तहां बीच चेहेबच्चा जान ।।
तहां फूहारें उछरत, चारों कोनों पर ।
मोती बूंद ज्यों उछरत, कह्या मोमिनों की खातर ।। बड़ी वृत 88/24, 25

कुंज व निकुंज वन के महल दो भोम ऊंचे हैं। निकुंज वन में कुण्ड ऊपर से खुला और कुंजवन में ढपा है। कुंज वन में दूसरी भोम में भी उसी प्रकार मंदिर, बगीचे, चेहेबच्चे एवं चबूतरा आया है। ऊपर तीसरी चांदनी में चारों तरफ किनार पर घेरकर कठेड़ा शोभायमान हैं।

जब हम सखियां संध्या के समय निकुंज वन की इन बगीचों में खेल रही होती हैं, तो इस कुण्ड और इसके चारों तरफ के बगीचों की शोभा अद्वितीय दिखायी देती है। बगीचों की नूरमयी रंग बिरंगी किरणों और बगीचों में खिले हुए फूलों से निकलता हुआ प्रकाश आपस में टकराते हुए ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो आपस में जंग कर रहे हों। रंगों के जंग को देखकर हम सखियां एवं वालाजी अत्यंत आनंदित होते हैं। कुण्ड के चारों तरफ चबूतरे पर बहुत ही सुंदर फूलों के सिंहासन एवं कुर्सियां शोभायमान हैं। हम सखियों और वाला जी के हंसी की आवाज जैसे आज भी कुंज–निकुंज वन में गूंज रही है।

कुंज–निकुंज वनों के एक महल के बाहरी तरफ चारों दिशाओं एवं चारों कोनों में कुल 8 नहरें निकली हैं। इन नहरों के दायें–बायें पाल शोभायमान है, जिन पर दो भोम ऊंचे महल बने हुए हैं। इन नहरों में बहता हुआ जल दूध से उज्ज्वल, मिश्री से मीठा, सुगंधित व अत्यंत निर्मल है। कुंज–निकुंज के महलों और नहरों की जगह छोड़कर चारों तरफ नूरमयी सुंदर कोमल बारीक रेती बिछी हुयी है।

कुंज–निकुंज के वनों में हम सब सखियां वाला जी के साथ कृष्णपक्ष की तृतीया में (तीसरे दिन) आते हैं। हम यहां एक प्रहर तक (दोप. 3–6 बजे तक) रहते हैं। एक प्रहर में 8 घड़ियां होती हैं, जिसमें से 6 घड़ी (सवा 2 घण्टे) में हम वाला जी के साथ अनेक प्रकारर से रमते–खेलते हैं। कुंजवन में भ्रमण करते हुए श्री राजश्यामा जी के सुंदर स्वरूप को देखकर आत्मा मुग्ध हो जाती है।

फिरते इन कुंज वन में, हक हादी देखिये जब।
सुंदर सरूप धणीय का, रूह अत सुख पावत तब।। बड़ी वृत 88/30

इस समय कोई सखी श्रीराजजी महाराज के साथ प्रेम भरी मीठीं बातें करते हुए चलती है, तो कोई सखी उन बातों को सुनते हुए आनंद ले रही है। कोई सखी श्रीराजजी के सुंदर मुखारविंद को निहारते हुए चल रही है, कोई हँसते–हँसते बातें कर रही है। इतने में एक सखी दौड़ते हुए श्रीराजश्यामाजी के सामने आ कर रास्ता रोक लेती है और अपनेपन के हुज्जत के साथ राजजी को खींचकर, कोई रामत खेलने के लिए ले जाती है। इस प्रकार बहुत आनंद होता है।

कोई हक हादी के संग चले, कोई आए रोकत राह दरम्यान ।
एह रामत रमें इन गली , खैंच चलत चतुर सुजान ।।बड़ी वृत्त 87/53

यहां कुंजवन में सखियों के लाडले अनेक प्रकार के खिलौने (पशु–पक्षी) हैं, जिनका कोई पारावार नहीं है। सभी धणी के अभिवादन व दर्शन के लिये आते हैं, स्वादिष्ट मेवे खिलाते हैं, फूलों के हार पहनाते हैं, और धणी को अनेक प्रकार से वाणी सुनाकर, नाच–गाकर, खेल–करतब दिखाकर रिझाते हैं। उन्हें इसी में सुख मिलता है। प्रियतम धाम धणी के आशिक ये पशु–पक्षी मुख से कई प्रकार से मीठी वाणी निकालते हुए धणी का गुणगान करते हैं। पशु–पक्षियों के सुंदर स्वरूप में कई प्रकार के रस भरे हैं, जिसे देखने पर नेत्रों में आनंद उत्पन्न होता है।

कई खिलौने कुंजवन में, इत पशु–पंखी नाहीं सुमार।
मुजरे को आवें सबे, करत सबे इत विहार।। बड़ी वृत 88/49

बट–घाट के पश्चिम से, कुंज–निकुंज वनों के बीच–बीच में से होते हुए, बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें पश्चिम तरफ निकली हैं। जो फूलबाग के पश्चिम से होकर रंगमहल के उत्तर दिशा के बड़ोवन से मिल गयी हैं। यहाँ लाल, नीले, पीले, हरे आदि अनेक रंगों के वृक्ष कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं। कई वृक्ष एक ही रंग के हैं, तो कई वृक्ष 10–10 रंगों के हैं।

कई बन स्याह सुपेत हैं , कई बन हैं नीले ।
कई बन लाल गुलाल हैं , कई बन हैं पीले ।। परि. 7/18

इनकी प्रत्येक भोमों में डालियों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोलें लटक रहे हैं, जिनमें श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ झूलने का आनंद लेते हैं। कहीं शैय्या हिण्डोले हैं, तो कहीं सिंहासन हिण्डोले हैं। कहीं सखियाँ खड़े होकर झूलती हैं, कहीं बैठकर झूलती हैं, कहीं एक सखी खड़ी होकर व एक सखी बैठकर एक साथ झूलने का आनंद लेती हैं।

कहूँ कहूँ सेज्या हिण्डोले , कहूँ हिण्डोले सिंहासन ।
कहूँ कहूँ खड़ियाँ हींचत , यों खेल होत इन बन ।। परि. 10/24
एक सोए हिण्डोले लेवहीं , एक बैठके हींचत ।
एक उठे एक बैठत हैं, यों जुगल केलि करत ।। परि. 10/25

जब हम सखियां सेज्या हिण्डोलों में वाला जी के साथ झूलने का सुख लेती हैं तो ऐसी इच्छा होती है कि यह घड़ी ठहर जाये। इन वनों में अनेकों प्रकार के फलों (मेवों) के वृक्ष हैं, जिनके स्वाद भी अनेक प्रकार के हैं। कई मीठे हैं, तो कई बहुत ही अधिक मीठे हैं, कई तीखे हैं, तो कई अधिक तीखे हैं, कई खट्टे हैं, तो कई नमकीन हैं।

कई मीठे मीठे मीठरड़े , कई फरसे फरसे मुख पर ।
कई तीखे तीखे तीखरड़े , कई खट्टे खट्टे खटूंबर ।। परि. 7/22

इस प्रकार 6 घड़ी (सवा 5 बजे तक) तक अनेक प्रकार से हाँस–विलास करने के बाद मध्य के चेहेबच्चे में जाकर झीलने का आनंद लेते हैं, फिर एक घड़ी में मंदिरों में श्रृंगार करके, सुखपालों में बैठकर रंगमहल की तरफ प्रस्थान करते हैं। कुंज–निकुंज के वन फूलों से, पत्तियों से, लताओं से और बेलों से बने होने के

कारण संध्या काल होते–होते अपनी चमक कई गुना बढ़ा देते हैं। और ऐसा लगता है मानो कुंज–निकुंज के वन दुल्हन की तरह सज गये हों। सुखपालों में बैठी हुई हम सखियां जब कुंज–निकुंज की शोभा को निहारती हैं तो कई लाख कोस फैला हुआ कुंज–निकुंज अपनी अनंत रंगों की किरणों को आकाश की ओर फेंकता है और इस दिव्य दीवाली के प्रकाश को देखकर हम सखियों के आंखों में कितने रंग उतर आते हैं। इस बात का सुख केवल हम ही जानते हैं। वाला जी के साथ इन रंगों की होली खेलने के बाद सीधा सुखपालों में बैठकर चांदनी चौक पहुंचते हैं और तत्पश्चात् पहली भोम में रसोई की हवेली में प्रस्थान करते हैं।

बट पीपल की चौकी

बट पीपल की चौकियाँ , चारों भोम हिण्डोले।
ए सुख कब हम लेवेंगे , हक हादी रूहें भेले।। परि. 20/24

परमधाम हम सब सखियों का निजवतन है। अनंत फूलों के रंगों, झरनों तथा फव्वारों से इसका श्रृंगार किया गया है। बलखाती लहराती हुई यमूना जी की मधुर ध्वनि, बहती हुई सुगंधित हवाएं, खिलखिलाते वृक्षों के फूल, वृक्षों की नूरमयी पत्तियां, बहती हुई नहरें, नूरी जल, नूरी धरती, नूरी जवाहरात, नूरी बादल और नूरमयी पशु–पक्षी, ये सब परमधाम की सुंदरता को कई गुणा बढ़ा देते हैं। इस सुंदर वातावरण व मनमोहक ऋतु में धणी का नूरी कोमल, प्रेममयी स्वरूप हम रूहों के हृदय को आनंद के सिंध (सागर) में डुबों देता है।

रंगमहल जो कि हम रूहों का निजघर है, वह परमधाम के ठीक मध्य में स्थित है। इसकी दक्षिण दिक्षा में रंगमहल के चबूतरे से लगते हुए बट पीपल की चौकी आयी है, जो कि 1500 मंदिर की लम्बी तथा 500 मंदिर की चौड़ी है। हम रंगमहल के भोम भर ऊंचे चबूतरे (धाम चबूतरे) से सीढ़ियां उतरकर बट पीपल की चौकी में सीधे आ सकते हैं। कृष्ण पक्ष की तृतीया को हम सब सखियां वालाजी के साथ नूरमयी सुखपालों में बैठकर यहां आती हैं।

आईये! अब हम बट पीपल की चौकी की शोभा को निहारते हैं। बट पीपल की चौकी में 15 चौकों (बगीचों) की 5 हारें (पंक्तियां) विद्यमान हैं। इस प्रकार कुल 75 चौक होते हैं। प्रत्येक चौक की चारों दिशाओं में 4 नहरें एवं चारों कोनों में 4 चहबच्चे शोभायमान हैं। नहरों के दोनों तरफ कमर भर ऊंची रौंस (पाल) है, जिससे चौक में, चारों दिशा व कोनों में सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकि जगह में पाल की किनार पर रत्नजडित कठेड़ा शोभायमान है। सभी चहबच्चों से 5–5 रंगबिरंगे फव्वारे निकल रहे हैं। सभी नहरों के मध्य में पुल आया है, जिसके द्वारा हम नहरों को पार कर सकते हैं।